श्री हनुमान आरती

आरती कीजै हनुमान लला की,
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।

जाके बल से गिरिवर कांपै,
रोग दोष जाके निकट न झांकै।

अंजनि पुत्र महा बलदाई,
संतन के प्रभु सदा सहाई।

दे बीरा रघुनाथ पठाये,
लंका जारि सिया सुधि लाई।

लंका सो कोट समुद्र सी खाई,
जात पवनसुत बार न लाई।

लंका जारि असुर संहारे,
सीता रामजी के काज संवारे।

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे,
आनि संजीवन प्राण उबारे।

पैठि पाताल तोरि जम कारे,
अहिरावन की भुजा उखारे।

बायें भुजा असुर दल मारे,
दाहिने भुजा संत जन तारे।

सुर नरमुनिजन आरती उतारें,
जय जय जय हनुमान उचारें।

कंचन थार कपूर की बाती,
आरति करत अंजना माई।

जो हनुमानजी की आरती गावै,
बसि बैकुण्ठ अमर फल पावै।

लंका विध्वंस किये रघुराई,
तुलसीदास स्वामी कीर्ति गाई।

आरती कीजै हनुमान लला की,
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।

[1]

---

[1] सौजन्य से:

धर्मयात्रा **(DharmYaatra)**

वेबसाइट: https://dharmyaatra.in/

व्हाट्सऐप नंबर: +917410957600

नोट: यदि आप वैदिक ज्ञान 🔱, धार्मिक कथाएं 🕉️, मंदिर व ऐतिहासिक स्थल 🛕, भारतीय इतिहास, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य 🧠, योग व प्राणायाम 🧘, घरेलू नुस्खे 🥥, धर्म समाचार 📰, शिक्षा व सुविचार 👣, पर्व व उत्सव 🪔, राशिफल 🌌 तथा सनातन धर्म की अन्य धर्म शाखाएं ☸️ (जैन, बौद्ध व सिख) इत्यादि विषयों के बारे में प्रतिदिन कुछ ना कुछ जानना चाहते हैं तो आपको धर्मयात्रा संस्था के विभिन्न सोशल मीडिया खातों से जुड़ना चाहिए। उनके लिंक हैं:

व्हाट्सएप ग्रुप व्हाट्सएप चैनल

फेसबुक पेज इंस्टाग्राम प्रोफाइल